

---

# Dehastha Devata Chakra Stotram

---

## देहस्थदेवताचक्रस्तोत्रम्

---

### Document Information

---

Text title : Dehastha Devata Chakra Stotram by Abhinavagupta

File name : dehasthadevatAchakrastotram.itx

Category : deities\_misc, abhinavagupta

Location : doc\_deities\_misc

Author : Abhinavagupta

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description-comments : from Abhinavastotravali

Latest update : December 18, 2021

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 18, 2021

*sanskritdocuments.org*

---

देहस्थदेवताचक्रस्तोत्रम्




देहो देवालयः प्रोक्तः स्वात्मा देवः सनातनः ।  
त्यजेदज्ञाननिर्माल्यं सोऽहं भावेन पूजयेत् ॥ १ ॥  
असुरसुरवृन्दवन्दितमभिमतवरवितरणे निरतम् ।  
दर्शनशताग्र्यपूज्यं प्राणतनुं गणपतिं वन्दे ॥ २ ॥  
वरवीरयोगिनीगणसिद्धावलिपूजिताङ्घ्रियुगलम् ।  
अपहृतविनयिजनार्तिं वटुकमपानाभिधं वन्दे ॥ ३ ॥  
यद्धीबलेन विश्वं भक्तानां शिवपथं भाति ।  
तमहमवधानरूपं सद्गुरुममलं सदा वन्दे ॥ ४ ॥  
आत्मीयविषयभोगैरिन्द्रियदेव्यः सदा हृदम्भोजे ।  
अभिपूजयन्ति यं तं चिन्मयमानन्दभैरवं वन्दे ॥ ५ ॥  
उदयावभासचर्वणलीलां विश्वस्य या करोत्यनिशम् ।  
आनन्दभैरवीं तां विमर्शरूपामहं वन्दे ॥ ६ ॥  
अर्चयति भैरवं या निश्चयकुसुमैः सुरेशपत्रस्था ।  
प्रणमामि बुद्धिरूपां ब्रह्मणीं तामहं सततम् ॥ ७ ॥  
कुरुते भैरवपूजामनलदलस्थाऽभिमानकुसुमैर्या ।  
नित्यमहङ्कृतिरूपां वन्दे तां शाम्भवीमम्बाम् ॥ ८ ॥  
विदधाति भैरवार्चां दक्षिणदलगा विषेशकुसुमैर्या । (विकल्पकुसुमैर्या)  
नित्यं मनःस्वरूपां कौमारीं तामहं वन्दे ॥ ९ ॥  
नैर्ऋतदलगा भैरवमर्चयते शब्दकुसुमैर्या ।  
प्रणमामि श्रुतिरूपां नित्यं तां वैष्णवीं शक्तिम् ॥ १० ॥ (शब्दरूपाम्)  
पश्चिमदिग्दलसंस्था हृदयहरैः स्पर्शकुसुमैर्या ।  
तोषयति भैरवं तां त्वग्रूपधरां नमामि वाराहीम् ॥ ११ ॥


वरतररूपविशेषैर्मारुतदिग्दलनिषण्णदेहा या ।  
पूजयति भैरवं तामिन्द्राणीं दृक्तनुं वन्दे ॥ १२ ॥  
धनपतिकिसलयनिलया या नित्यं विविधषड्रसाहारैः ।  
पूजयति भैरवं तां जिह्वाभिख्यां नमामि चामुण्डाम् ॥ १३ ॥  
ईशदलस्था भैरवमर्चयते परिमलैर्विचित्रैर्या  
प्रणमामि सर्वदा तां घ्राणाभिख्यां महालक्ष्मीम् ॥ १४ ॥  
षड्दर्शनेषु पूज्यं षड्त्रिंशत्तत्त्वसंवलितम् ।  
आत्माभिख्यं सततं क्षेत्रपतिं सिद्धिदं वन्दे ॥ १५ ॥  
संस्फुरदनुभवसारं सर्वान्तः सततसन्निहितम् ।  
नौमि सदोदितमित्थं निजदेहगदेवताचक्रम् ॥ १६ ॥  
इति श्रीअभिनवगुप्तपादाचार्यकृतं देहस्थदेवताचक्रस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

There is a little variation between prints in relation to  
verse 1 and reversed order of shlokas 4-5.

Encoded and proofread by Ruma Dewan

---

——  
*Dehastha Devata Chakra Stotram*  
pdf was typeset on December 18, 2021

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

